



क्षुद्रग्रह नमूना वापसी

सन्दर्भ: सात वर्ष की यात्रा के बाद, नासा के क्षुद्रग्रह से शुरुआती नमूने 24 सितंबर को पैराशूट के माध्यम से यूटा रेगिस्तान में सुरक्षित रूप से पहुंचाए गए।

- ओसिरिस-रेक्स अंतरिक्ष यान ने 100,000 किमी (63,000 मील) की दूरी से पृथ्वी की उड़ान के दौरान अपना नमूना कैप्सूल अन्तरिक्ष में छोड़ा।
- अन्तरिक्ष में छोड़े जाने के लगभग चार घंटे बाद यह कैप्सूल सैन्य भूमि के एक दूरदराज के इलाके में उतरा, जबकि मुख्य यान (मदरशिप) ने एक अन्य क्षुद्रग्रह का पता लगाने के लिए अपना मिशन जारी रखा।
- वैज्ञानिकों का मानना है कि कैप्सूल में कम से कम एक कप सामग्री है जो बेन्नु नामक कार्बन-समृद्ध क्षुद्रग्रह से एकत्र की गई है। हालांकि, कैप्सूल खोले जाने तक सामग्री की पुष्टि नहीं की गई है।
- जापान, क्षुद्रग्रह के नमूने लौटाने वाला एकमात्र अन्य देश है, जिसने दो मिशनों के दौरान लगभग एक चम्मच मूल्य के नमूने एकत्र किए।

उत्पत्ति, वर्णक्रमीय व्याख्या, संसाधन पहचान, सुरक्षा, रेगोलिथ एक्सप्लोरर (OSIRIS-REx)

- **मिशन लक्ष्य:** OSIRIS-REx को क्षुद्रग्रह 101955 बेन्नु से कम से कम 2.1 औंस (59.5 ग्राम) वजन का एक नमूना एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किया गया था ताकि, इस नमूने को वैज्ञानिक अध्ययन के लिए पृथ्वी पर वापस लाया जा सके।
- **वैज्ञानिक उद्देश्य:** इस मिशन का उद्देश्य ग्रहों के निर्माण, जीवन की उत्पत्ति और क्षुद्रग्रहों की बेहतर समझ प्रदान करना है जो संभावित रूप से पृथ्वी को प्रभावित कर सकते हैं।
- **ऐतिहासिक मिशन:** OSIRIS-REx ने संयुक्त राज्य अमेरिका के पहले क्षुद्रग्रह नमूना वापसी मिशन को चिह्नित किया, जो अंतरिक्ष अन्वेषण में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।
- **प्रक्षेपण की तारीख:** अंतरिक्ष यान 8 सितंबर, 2016 को लॉन्च किया गया था और बेन्नु तक पहुंचने के लिए सात वर्ष की लंबी यात्रा पर निकला था।
- **बेन्नु पर आगमन:** OSIRIS-REx 2018 में अपने लक्ष्य, क्षुद्रग्रह बेन्नु तक पहुंच गया, जहां इसने व्यापक अवलोकन और मूल्यांकन किए।
- **नमूना वापसी:** अंतरिक्ष यान ने बेन्नु की सतह से सफलतापूर्वक नमूना एकत्र किया, और नमूने 2023 में पृथ्वी पर आने वाले थे, जो 24 सितंबर को वापस आया।
- **TAGSAM सफलता:** इस मिशन में अंतरिक्ष यान की रोबोटिक भुजा, जिसे टच-एंड-गो सैपल एक्विजिशन मैकेनिज्म (TAGSAM) के रूप में जाना जाता है, ने क्षुद्रग्रह पर एक निर्दिष्ट साइट से सफलतापूर्वक एक नमूना एकत्र किया।
- **मिशन विस्तार:** बेन्नु से नमूना संग्रह के बाद, अंतरिक्ष यान के एक विस्तारित मिशन पर जाने की उम्मीद थी जो इसे 2029 में निकट-पृथ्वी क्षुद्रग्रह एपोफिस के चारों ओर कक्षा में ले जाएगा।

क्षुद्रग्रह बेन्नु

- बेन्नु 4.5 अरब वर्ष से अधिक पुराना एक प्राचीन खगोलीय पिंड है, जो प्रारंभिक सौर मंडल के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- यह चट्टानी ग्रहों के निर्माण खंड का प्रतिनिधित्व करता है और इसमें पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति से संबंधित कार्बनिक अणु हो सकते हैं।
- बेन्नु अपेक्षाकृत छोटा है (लगभग एक-तिहाई मील चौड़ा)।
- सूर्य से इसकी औसत दूरी लगभग 105 मिलियन मील है, जो पृथ्वी की कक्षा से थोड़ी अधिक है।
- बेन्नु प्रत्येक 1.2 वर्ष में सूर्य की परिक्रमा करता है और प्रत्येक 4.3 घंटे में एक चक्कर पूरा करता है।
- यह प्रत्येक छह वर्ष में पृथ्वी के करीब पहुंचता है।
- बेन्नु का कक्षीय पथ पृथ्वी की कक्षा के सापेक्ष लगभग 5 डिग्री झुका हुआ है।
- पृथ्वी के 23 डिग्री झुकाव के विपरीत, इस क्षुद्रग्रह का भूमध्य रेखा लगभग 175 डिग्री झुका हुआ है, जो हमारे मौसम का कारण बनता है।
- बेन्नु की उत्पत्ति संभवतः 700 मिलियन से 2 अरब वर्ष पहले एक बड़े कार्बन-समृद्ध क्षुद्रग्रह से हुई थी और संभवतः मुख्य क्षुद्रग्रह बेल्ट में इसका निर्माण हुआ था।
- विशाल ग्रहों के साथ गुरुत्वाकर्षण संपर्क और यार्कोव्स्की (Yarkovsky) प्रभाव के कारण समय के साथ बेन्नु पृथ्वी के करीब आ गया।

यार्कोव्स्की (Yarkovsky) प्रभाव

- यार्कोव्स्की प्रभाव छोटी अंतरिक्ष वस्तुओं, मुख्य रूप से क्षुद्रग्रहों और उल्कापिंडों (10 सेमी से 10 किमी व्यास) को प्रभावित करने वाला एक बल है, जो थर्मल फोटॉन के असमान उत्सर्जन के कारण होता है।
- **इसमें दो मुख्य घटक शामिल हैं:**
 1. **दैनिक प्रभाव:** क्षुद्रग्रहों जैसे घूमने वाले पिंडों पर, दिन-रात के चक्र के दौरान सतह का असमान ताप और ठंडा होना उनकी कक्षा की दिशा में एक बल उत्पन्न करता है। इसके कारण प्रोग्रेड रोटेटर सूर्य से दूर चले जाते हैं और रेट्रोग्रेड रोटेटर अंदर की ओर चले जाते हैं। यह लगभग 100 मीटर व्यास से बड़ी वस्तुओं के लिए प्रभावी है।
 2. **मौसमी प्रभाव:** यह प्रभाव तब प्रमुख होता है जब गैर-घूर्णन पिंड सूरज की परिक्रमा करते हैं। कक्षीय गति दिशा में अतिरिक्त तापीय विकिरण के परिणामस्वरूप ब्रेकिंग बल उत्पन्न होता है, जिससे वे अंदर की ओर सर्पिल हो जाते हैं। यह अधिक अक्षीय झुकाव के साथ अधिक महत्वपूर्ण है और जब दैनिक प्रभाव न्यूनतम होता है या लंबी अवधि में बदलता है तो यह हावी हो सकता है।
- यार्कोव्स्की प्रभाव आकार पर निर्भर है, जो छोटी अंतरिक्ष वस्तुओं की अर्ध-प्रमुख धुरी को प्रभावित करता है जबकि बड़ी वस्तुओं पर न्यूनतम प्रभाव डालता है।
- लाखों वर्षों में, यार्कोव्स्की प्रभाव एक क्षुद्रग्रह की कक्षा को बाधित कर सकता है, संभावित रूप से इसे क्षुद्रग्रह बेल्ट से आंतरिक सौर मंडल तक ले जा सकता है।
- अत्यधिक विलक्षण कक्षाओं वाली वस्तुओं के लिए यह प्रभाव अधिक जटिल हो जाता है।

फाइव आइज़ एलायंस (Five Eyes Alliance)

सन्दर्भ: हाल ही में कनाडा में अमेरिकी राजदूत डेविड कोहेन ने कनाडा के सीटीवी के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि कनाडा के दावों को "फाइव आइज़ पार्टनर्स से साझा खुफिया जानकारी" का समर्थन प्राप्त है।

- फाइव आइज़ साझेदारी में अत्यधिक एकीकृत बहुपक्षीय व्यवस्था में खुफिया जानकारी साझा करने वाले देश शामिल हैं।
- **सदस्य:** यूएसए, यूके, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड।
- भाग लेने वाले राष्ट्र, कानून के शासन और मजबूत मानवाधिकारों द्वारा शासित विविध समाज हैं, जो एक सामान्य भाषा साझा करते हैं।
- इस गठबंधन की उत्पत्ति द्वितीय विश्व युद्ध से हुई जब ब्रिटेन और अमेरिका ने जर्मन और जापानी कोड को तोड़ने के बाद खुफिया जानकारी साझा करना शुरू किया।
- 1943 में BRUSA समझौते ने UKUSA समझौते की नींव रखी, जिसे आधिकारिक तौर पर 1946 में बनाया गया था।
- 1949 में कनाडा इसमें शामिल हुआ, उसके बाद 1956 में न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया शामिल हुए, जिससे फाइव आइज़ गठबंधन बना।
- जबकि इसका अस्तित्व 1980 के दशक से ज्ञात था, यूके यूएसए समझौते की फाइलें आधिकारिक तौर पर 2010 में जारी की गईं।

Face to Face Centres





यह कैसे काम करता है?

- फ्राइव आइज़ देश साझा हितों के कारण, विशेषकर चीन के उत्थान के प्रबंधन में, एक-दूसरे के करीब आ गए हैं।
- उनकी आम भाषा और लंबे समय से चले आ रहे भरोसे ने इस संरक्षण में योगदान दिया है।
- 2016 में गठित फाइव आइज़ इंटीलिजेंस ओवरसाइट एंड रिव्यू काउंसिल, इन देशों की खुफिया निगरानी और सुरक्षा संस्थाओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देती है।
- अपनी निकटता के बावजूद, इन देशों की विदेश नीतियां हमेशा एक समान नहीं होती हैं।
- अन्य चार के विपरीत, न्यूजीलैंड ने हांगकांग और शिनजियांग में चीनी कार्यों की खुले तौर पर आलोचना नहीं की है, जिसका मुख्य कारण चीन के साथ मजबूत व्यापार संबंध हैं।
- अमेरिका ने QUAD और AUKUS जैसे अन्य सुरक्षा समूहों के माध्यम से अपना प्रभाव बढ़ाया है, जिसमें समान सुरक्षा चिंताओं वाले देशों को शामिल किया गया है।

इंडो-यूरोपियन (इंडो-आर्यन) भाषाएँ

सन्दर्भ: हाल ही में तुर्की में एक उत्खनन से एक अज्ञात इंडो-यूरोपीय भाषा का पता चला है।

- तुर्की में हित्ति साम्राज्य की पूर्व राजधानी बोगाज़कोई-हत्तुशा (Boğazköy-Hattusha) में पुरातात्विक खुदाई के दौरान एक पूर्व अज्ञात इंडो-यूरोपीय भाषा प्राप्त हुई है।
- जर्मन पुरातत्व संस्थान द्वारा निर्देशित इस यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल पर एक शताब्दी से अधिक समय से की गई खुदाई में कीलाकार लेखन वाली लगभग 30,000 मिट्टी की गोलियाँ मिली हैं।
- यूनेस्को की विश्व वृत्तचित्र विरासत का हिस्सा, इन गोलियों ने हित्ति इतिहास, समाज, अर्थव्यवस्था और धार्मिक प्रथाओं के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान की है।
- एक हित्ती सांस्कृतिक ग्रन्थ में एक छिपी हुई भाषा का पता चला, जिसे "कालास्मा की भूमि की भाषा (language of the land of Kalašma,)" कहा जाता है, जो संभवतः उत्तर-पश्चिमी हित्ती में, वर्तमान बोलू या गेरेडे (Bolu or Gerede) के पास स्थित है।
- हिलियों को विदेशी भाषाओं में अनुष्ठानों का दस्तावेजीकरण करने में विशेष रुचि थी, जिसके परिणामस्वरूप उनके क्यूनिफॉर्म ग्रंथों में विभिन्न भाषाएँ पाई गईं, जिनमें लुवियन, पलाइक, हैटिक (एक गैर-इंडो-यूरोपीय भाषा) और अब कलस्मा की भाषा शामिल है।

इंडो-आर्यन भाषाएँ

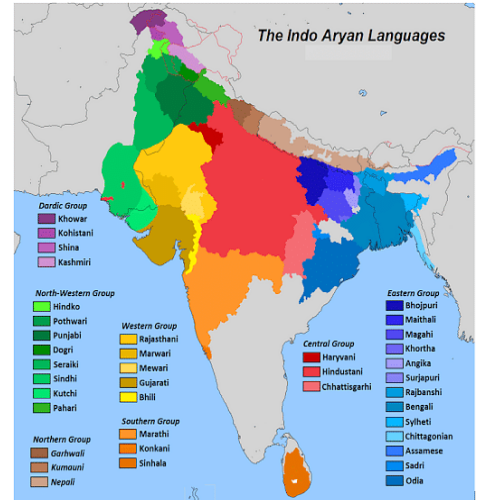
- इंडो-आर्यन भाषाएँ भारत के सबसे बड़े भाषा समूहों में से एक हैं।
- वे भारत की आबादी का 74% हिस्सा हैं और इसमें हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी और अन्य प्रमुख भाषाएँ शामिल हैं।
- ये भाषाएँ दुनिया भर में प्रवासी समुदायों द्वारा भी बोली जाती हैं।
- वर्तमान में 200 से अधिक ज्ञात इंडो-आर्यन भाषाएँ हैं।

इंडो-आर्यन भाषा के चरण:

- **प्राचीन इंडो-आर्यन समूह:** लगभग 1500 ईसा पूर्व निर्मित, इसमें सभी भारतीय भाषाओं की जननी मानी जाने वाली संस्कृत शामिल है।
- **मध्य इंडो-आर्यन समूह:** लगभग 600 ईसा पूर्व से 1000 ईस्वी तक गठित, इसमें पाली, अर्ध-मागधी, शौरसेनी और महाराष्ट्री जैसे प्राकृत भाषाओं की विशेषता है।
- **आधुनिक इंडो-आर्यन समूह:** 1000 ईस्वी के बाद विकसित, इसमें पश्चिमी और पूर्वी भारत में बोली जाने वाली हिंदी, बंगाली, गुजराती और अन्य भाषाएँ शामिल हैं।

विकास एवं विशेषताएँ:

- **संस्कृत:** लगभग 1500 ईसा पूर्व विकसित, इसका वेदों, उपनिषदों और पुराणों में उपयोग किया गया।
- **प्राकृत:** आम जनता द्वारा संस्कृत के साथ-साथ अनौपचारिक भाषा का प्रयोग किया जाता है।
- **अपभ्रंश:** मध्य काल से आधुनिक इंडो-आर्यन भाषाओं में परिवर्तित होकर एक साहित्यिक भाषा बन गई।



विब्रियो वल्निकस (Vibrio vulnificus)

सन्दर्भ: नेचर साइंटिफिक रिपोर्ट्स 2023 के एक अध्ययन के अनुसार, 1988 और 2018 के बीच, पूर्वी अमेरिका में वी. वल्निकस (V. vulnificus) से घाव का संक्रमण आठ गुना बढ़ गया।

- वी वल्निकस एक खतरनाक जीवाणु है जो घाव के संक्रमण और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़ा है।
- जागरूकता की कमी के कारण भारत में वी वल्निकस संक्रमण के मामले कम दर्ज किए जाते हैं।
- इससे गैंग्रीन, सेप्टीसीमिया जैसी बीमारी और 24 घंटे के भीतर मृत्यु भी हो सकती है।
- यह संक्रमण संक्रमित कच्ची शंख के सेवन या दूषित पानी के घावों के संपर्क में आने से होता है।
- वी वल्निकस सम्बन्धी मृत्यु दर 15-50% है, जो इसे एक गंभीर चिंता का विषय बनाती है।

वातावरणीय कारक:

- वी वल्निकस उष्णकटिबंधीय या उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में 20 डिग्री सेल्सियस या इससे अधिक और कम लवणता वाले पानी के तापमान पर पनपता है।
- जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र की सतह के बढ़ते तापमान और बढ़ी हुई वर्षा से जोखिम बढ़ सकता है।
- भारत की समुद्री सतह का तापमान औसतन 28 डिग्री सेल्सियस है, जो इसे वी वल्निकस के विकास के लिए अनुकूल बनाता है।
- अरब सागर और बंगाल की खाड़ी गर्म हो रही हैं, जिससे वी वल्निकस का निवास स्थान और बढ़ रहा है।
- अधिक वर्षा से समुद्र में नमक का स्तर कम हो जाता है, जिससे बैक्टीरिया को लाभ होता है।





भारत में कम रिपोर्टिंग

- भारत में वी वल्लिनकस संक्रमण की कम रिपोर्टिंग चिकित्सकों और प्रयोगशाला कर्मियों के बीच जागरूकता की कमी के कारण हो सकती है।
- शोधकर्ता समुद्री वातावरण के पास रहने वाले मांस खाने की बीमारी के लक्षण वाले रोगियों में वी वल्लिनकस के परीक्षण पर विचार करने की सलाह देते हैं।
- वी वल्लिनकस संक्रमण नियमित रूप से भारत में समुद्री भोजन और समुद्री वातावरण में पाया जाता है।
- इस संक्रमण की घटना दर अलग-अलग होती है, समुद्री मछली में 13-16%, मोलस्का शेलफिश में 38.5% और सीप में 43-75% होती है।
- भारतीय मुख्य रूप से ठीक से पकाए गए समुद्री भोजन का सेवन करते हैं, जिससे इस संक्रमण का खतरा कम हो जाता है।

विस्तार और प्रभाव:

- मनुष्यों में वी वल्लिनकस का पहला मामला 1976 में अमेरिका में दर्ज किया गया था।
- 1988 और 2018 के बीच, पूर्वी यू.एस. में वी वल्लिनकस के कारण घाव में संक्रमण आठ गुना बढ़ गया।
- उत्तरी यूरोप में भी तटीय जल में तैराकी या स्नान से जुड़े वी वल्लिनकस संक्रमण में वृद्धि देखी गई है।

समुद्री वाहक:

- वी वल्लिनकस (V vulnificus) समुद्री जीवों के माध्यम से फैलता है, जिसमें कुछ मछली प्रजातियां भी रोग वाहक का कार्य करती हैं।
- इस जीवाणु को 1975 में जापानी ईल में प्रलेखित किया गया था और 1985 में आयातित ईल के माध्यम से यह स्पेन पहुंचा।
- 2018 में, भारत के केरल में एक तिलापिया फार्म में इसका प्रकोप देखा गया।
- यह रोग वाहक विभिन्न समुद्री जीवों को प्रभावित करता है, जिनमें डर्बीओ (derbio), तिलापिया (tilapia), ट्राउट (trout), झींगा (shrimp) आदि शामिल हैं।

निवारक उपाय

- समुद्र की सतह के तापमान और फाइटोप्लांकटन के स्तर के आधार पर वी वल्लिनकस की प्रचुरता का आकलन करने के लिए पूर्वानुमानित उपकरण विकसित किए जा रहे हैं।
- उच्च फाइटोप्लांकटन फैलने से वी वल्लिनकस (V vulnificus) संक्रमण में वृद्धि होती है।
- जापान में गर्मियों में बैक्टीरिया का स्तर अधिक होने पर सीप और मसल्स जैसे द्विकपाटी (bivalves) का सेवन करने से परहेज किया जाता है।
- भारत में उचित उपचार के कारण हैजा की मृत्यु दर 1% है, जबकि शीघ्र उपचार के साथ भी वी वल्लिनकस की मृत्यु दर 15-50% है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

मुकुर्थी राष्ट्रीय उद्यान



अवस्थिति: मुकुर्थी राष्ट्रीय उद्यान भारत के तमिलनाडु में नीलगिरी पठार के पश्चिम में स्थित है।

नीलगिरी बायोस्फीयर रिजर्व का हिस्सा: यह नीलगिरी बायोस्फीयर रिजर्व का एक महत्वपूर्ण घटक है और यह मुदुमलाई राष्ट्रीय उद्यान और साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान से घिरा है।

वन्यजीव अभयारण्य से राष्ट्रीय उद्यान: इस क्षेत्र को शुरुआत में 1982 में एक वन्यजीव अभयारण्य के रूप में नामित किया गया था और बाद में 1990 में इसे राष्ट्रीय उद्यान में अपग्रेड किया गया।

यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल: इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल होने का गौरव प्राप्त है और इसे पहले नीलगिरी तहर राष्ट्रीय उद्यान के नाम से जाना जाता था।

वनस्पति: वनस्पति में गॉल्थेरिया प्रेगमेटिसिमा, हेलिक्रिसम, बर्बेरिस टिनक्टोरिया, रोडोडेंड्रोन, दालचीनी, महोनिया, सत्यरियम और रास्पबेरी शामिल हैं।

जीव-जंतु: मुकुर्थी राष्ट्रीय उद्यान नीलगिरी तहर, भारतीय हाथी, नीलगिरी लंगूर, बंगाल टाइगर और बोनट मकाक जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों का निवास स्थान है।

गैलेक्टिक ज्वार-भाटा के बारे में:

- गैलेक्टिक ज्वार-भाटा आकाशगंगाओं के भीतर गुरुत्वाकर्षण बल हैं, जो पृथ्वी के महासागर ज्वार के समान हैं।
- ये ज्वार-भाटा एक आकाशगंगा के भीतर खगोलीय वस्तुओं, जैसे कि तारों और गैस के बादलों के बीच परस्पर क्रिया के कारण उत्पन्न होते हैं, जो एक दूसरे पर गुरुत्वाकर्षण बल लगाते हैं।
- गैलेक्टिक ज्वार-भाटा आकाशगंगा के विकास के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है, जिसमें ज्वारीय पूंछ और पुल (tidal tails and bridges) बनाकर इसकी संरचना को फिर से आकार देना, तारों के निर्माण को बढ़ावा देना और छोटे तारा प्रणालियों को बाधित करना शामिल है।
- लम्बी समय अवधि में, आकाशगंगा के ज्वार-भाटा तारों की कक्षाओं को बाधित करते हैं, जिससे आकाशगंगा की संरचना में महत्वपूर्ण दीर्घकालिक परिवर्तन होते हैं।
- गैलेक्टिक ज्वार पड़ोसी आकाशगंगाओं के बीच परस्पर क्रिया को भी प्रभावित करते हैं।
- गैलेक्टिक ज्वार-भाटा आकाशगंगाओं के केंद्रों पर सुपरमैसिव ब्लैक होल के व्यवहार को भी प्रभावित करता है।

गैलेक्टिक ज्वार-भाटा (Galactic tides)



चिनार के पेड़ों के बारे में:

- चिनार को वैज्ञानिक रूप से प्लैटेनस ओरिएंटलिस के नाम से जाना जाता है।
- यह कश्मीर का आधिकारिक वृक्ष है।
- चिनार के पेड़ों को उनके लंबे कद (25 मीटर तक) और शरद ऋतु के दौरान उनके पत्तों के हरे से चमकीले लाल तथा नारंगी रंग में होने वाले आश्चर्यजनक परिवर्तन से पहचाना जाता है।
- ये पेड़ पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विभिन्न प्रजातियों के लिए छाया एवं आश्रय प्रदान करते हैं। साथ ही ये हवा से प्रदूषकों को फिल्टर करते हैं और अपनी गहरी जड़ों से मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद करते हैं।
- हाल के वर्षों में कश्मीर में चिनार के पेड़ों में गिरावट देखी गई है, जिससे इस प्रतिष्ठित प्रजाति की सुरक्षा और संरक्षण के लिए सरकार के नेतृत्व में वृक्षरोपण अभियान चलाया गया है।
- अपनी प्राकृतिक सुन्दरता जे अतिरिक्त, चिनार के पेड़ जलवायु विनियमन और जैव विविधता के लिए समर्थन सहित महत्वपूर्ण पर्यावरणीय लाभ प्रदान करते हैं।




चिनार



Face to Face Centres





<p>फिश मिंट (Fish Mint)</p> 	<p>फिश मिंट क्या है? फिश मिंट, या हाउट्टुनिया कॉर्डेटा (<i>Houttuynia cordata</i>), एक जड़ी-बूटी है जो अपने मछली जैसे स्वाद और गंध के लिए जानी जाती है, हालांकि यह दिखने में मछली जैसी नहीं होती है। उत्पत्ति: यह दक्षिण पूर्व एशिया की स्थानिक प्रजाति है, यह नम मिट्टी में पनपता है और बाढ़ प्रतिरोधी है। किस्में: इसकी दो मुख्य किस्में हैं - चीनी (धनिया जैसी सुगंध) और जापानी (नींबू या अदरक जैसी सुगंध)। भारत में उपयोग: इसे पूर्वोत्तर राज्यों में अलग-अलग नामों से पाया जाता है जैसे मेघालय में "जा मर्दोह" और मणिपुर में "टोकनिंग-खोक"। इसे सलाद और गार्निश में उपयोग किया जाता है। औषधीय गुण: इसे एंटी-एलर्जी और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों के लिए पारंपरिक चीनी, जापानी, आयुर्वेद और सिद्ध दवाओं में उपयोग किया जाता है। अस्थमा का उपचार: अस्थमा के इलाज के लिए पारंपरिक चीनी चिकित्सा में इसका उपयोग किया जाता है, जिसमें लक्षणों और वायुमार्ग की संकीर्णता को कम करने की क्षमता होती है। मौखिक स्वास्थ्य: इसकी हर्बल चाय, दंत बायोफिल्म, दंत क्षय और पेरियोडॉन्टल रोग को नियंत्रित करती है; प्लाक निर्माण विरोधी (anti-plaque) गतिविधि प्रदर्शित करता है। COVID-19 क्षमता: इसे SARS-CoV-2 जैसे वायरस के खिलाफ चिकित्सा के लिए एक न्यूट्रास्युटिकल एजेंट (nutraceutical agent) के रूप में खोजा गया।</p>
<p>मथाले गुफाएँ</p> 	<p>मथाले गुफाओं (Mathale Caves) के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ मथाले, श्रीलंका में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की प्राचीन बौद्ध रॉक-कट गुफाएँ हैं। ➤ ये गुफाएँ वे स्थान हैं जहाँ भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को पहली बार ताड़ के पत्तों पर लिखा गया था, जो मौखिक से लिखित प्रसारण में बदलाव का प्रतीक था। ➤ श्रीलंकाई राजा देवनमपिया तिससा ने यहाँ बुद्ध की शिक्षाओं के प्रतिलेखन को प्रायोजित किया, जो भारत में बौद्ध साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था। ➤ बुद्ध की शिक्षाएँ, जिन्हें त्रिपिटक कहा जाता है, जिनमें सूत्र, विनय और अभिधम्म पिटक शामिल हैं, को मथाले गुफाओं में लिखा गया था। ➤ प्रसिद्ध थेरवाद बौद्ध दार्शनिक आचार्य बुद्धघोष इन गुफाओं में रहते थे और उन्होंने महत्वपूर्ण ग्रंथ विशुद्धिमग्गा लिखा था। ➤ मथाले बुद्ध विहार में आचार्य बुद्धघोष की विरासत को श्रद्धांजलि देने के लिए एक स्कूल है। ➤ गुफाएँ, आसपास के मठ और कलाकृतियाँ भारत के तेलुगु राज्यों और श्रीलंका की बौद्ध विरासत के बीच गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित करती हैं।
<p>समाचारों में स्थान</p> <p>इज्म्यूडेन (Ijmuiden)</p>	<p>हाल ही में, डच नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पब्लिक हेल्थ एंड द एनवायरनमेंट ने खुलासा किया कि नीदरलैंड के इज्म्यूडेन में टाटा स्टील प्लांट के पास रहने वाले व्यक्तियों को राष्ट्रीय औसत की तुलना में 2.5 महीने की कम जीवन प्रत्याशा का अनुभव हो रहा है। नीदरलैंड (राजधानी: एम्स्टर्डम) अवस्थिति: नीदरलैंड उत्तर-पश्चिमी यूरोप में स्थित है। राजनीतिक सीमाएँ: इसकी सीमाएँ पूर्व में जर्मनी और दक्षिण में बेल्जियम से लगती हैं। भौगोलिक विशेषताएँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ प्रमुख नदियाँ: महत्वपूर्ण नदियों में राइन, म्यूज़ (मास), और शेल्ड्ट (स्केल्डे) शामिल हैं, जो देश से होकर बहती हैं। ➤ प्रमुख बंदरगाह: रॉटरडैम यूरोप के सबसे व्यस्त बंदरगाहों में से एक है, और शिफोल एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है। ➤ कैरेबियन क्षेत्र: कैरेबियन में, अरूबा, कुराकाओ और सिंट मार्टेन नीदरलैंड साम्राज्य के घटक देश हैं। 

POINTS TO PONDER

- ❖ नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने किस राज्य के जल निकायों पर चलने वाले कूज जहाजों पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया? - मध्य प्रदेश
- ❖ किस राज्य के मुख्यमंत्री को ली कुआन यू एक्सचेंज फ़ेलोशिप (Lee Kuan Yew Exchange Fellowship) से सम्मानित किया गया है? - असम
- ❖ किस देश ने देश में प्रवेश करने वाली सभी रूसी-पंजीकृत यात्री कारों पर यूरोपीय संघ (ईयू) प्रतिबंध लागू कर दिया है? - पोलैंड
- ❖ किस संस्था ने 75 वर्ष से अधिक उम्र के कलाकारों के लिए विशेष पुरस्कार की घोषणा की? - संगीत नाटक अकादमी
- ❖ किस राज्य ने 'गृह आधार' और 'चावथ ई बाज़ार' ('Griha Adhar' and 'Chavath e Bazaar') पहल शुरू की? - गोवा

